International Journal of History 2023; 5(2): 116-123

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(2): 116-123
Received: 05-06-2023
Accepted: 12-07-2023

मेजर वर्मा
शोधार्थी, इतिहास विभाग
पी०एच०डी०, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
मेजर वर्मा
शोधार्थी, इतिहास विभाग
पी०एच०डी०, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

विभाजन संग्रहालय : स्मृतियाँ, भावनाएं और इतिहास

मेजर वर्मा

सारांश
विभाजन की घटना भारतीय इतिहास लेखन में एक संवेदनशील विषय रहा है, जिसे अबतक आधिकारिक स्रोतों के आधार पर ही समझने की कोशिश की गई है। लेकिन नवीन छात्रवृतियों ने इस विषय को सूक्ष्म अध्ययन के ज़रिए नवीनता प्रदान की है। इस संदर्भ में अमृतसर में स्तिथ विभाजन संग्रहालय इस घटना में स्मृतियों, भावनाओं और इतिहास के क्षेत्र में एक नवीन अध्ययन की प्रविति को उजागर करता है। यह लेख मुख्यतः इतिहास लेखन में मौखिक और दृश्यात्मक स्रोतों की महत्वपूर्णता पर बात करता है।

कूटशब्द : विभाजन, संग्रहालय, स्मृतियाँ, भावनाएँ, मौखिक स्रोत, स्वतंत्रता, अमृतसर, साक्षात्कार, दृश्यात्मक स्रोत, क़िस्से-कहानी, विभाजन साहित्य, चंडीगढ़।

प्रस्तावना
भारतीय इतिहास में 'विभाजन' एक महत्वपूर्ण घटना रही है, इस प्रक्रिया में उभरे विभिन्न मार्मिक रूपों ने इसे इतिहास में एक संवेदनशील विषय की श्रेणी में ला खड़ा किया है। विभाजन को जहाँ तत्काल लागू कर दिया गया था, वहीं दूसरी तरफ इस घटना का सामाजिक व मनोवैज्ञानिक प्रभाव दीर्घकालीन रहा है। "हाल के वर्षों में अकादमिक लेखन में हिंसा के चित्रण करने पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है, विशेषकर मानवविज्ञानी व विभाजन पर हुई घटनाओं से जूझने वाले लोगों द्वारा भी।[1] यहाँ यह देखना भी आवश्यक हो जाता है कि लोगों का वास्तविक रूप से विभाजन कब हुआ? उन्होंने कब तक इसे अपनी स्मृतियों में रखा?

[1] वज़ीरा फाज़िला- याकूबली ज़मींदार, *द लॉंग पार्टीशन एंड द मेकिंग ऑफ़ मॉडर्न साउथ एशिया : रिफ़्यूजीस, बाउंडरीज़, हिस्ट्रीज़,* (न्यू यॉर्क : कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007) पृ० 21

चूंकि उस समय होने वाली क्रूर हिंसा का दर्द और भय अभी भी लोगों के दिलों-दिमाग़ पर अपनी छाप छोड़े हुए है और शायद यह आने वाली कई पीढ़ियों तक भी जारी ही रहे। अतः हमें समय के साथ-साथ विभाजन संबंधित स्मृतियों, मानवजाति वर्णनों तथा उसे लेकर हमारे नज़रिए में आए बदलावों को भी देखना आवश्यक है।

इस लेख का मुख्य लक्ष्य विभाजन संग्रहालय में आए आगंतुकों के मौखिक साक्षात्कारों द्वारा विभाजन सम्बन्धित हमारी स्मृतियों और भावनाओं में पिछले सत्तर वर्षों में आए बदलावों को देखना है। लोग किस प्रकार से संग्रहालय को एक विभाजन स्मारक या स्मरणोत्सव के रूप में स्वीकार कर रहे हैं? क्या संग्रहालय के मौखिक व दृश्यात्मक संग्रह लोगों को विभाजन की हिंसा, शरणार्थी, स्थानांतरण इत्यादि अन्य पहलुओं को ज़्यादा साक्षात रूप से अवगत करा पा रहे हैं? यह संग्रह नई पीढ़ी को विभाजन का चरित्र किस रूप में प्रदर्शित कर रहा है? संग्रह में किन मुद्दों पर चुप्पी है? समय के साथ-साथ स्मृतियों और भावनाओं में क्या परिवर्तन आए? और अंत में यह संग्रहालय किस प्रकार से ज्ञान निर्माण प्रक्रिया में सहायक है? यह देखना भी हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

चूंकि यह लेख मुख्यतः मौखिक स्रोतों और मौखिक साक्षात्कारों द्वारा प्राप्त जानकारियों पर ही आधारित है अतःउन साक्षात्कारों व स्रोतों के बारे में बात करने से पहले हमें सर्वप्रथम मौखिक स्रोतों के विभिन्न महत्वों को समझना आवश्यक हो जाता है। इस संदर्भ में पॉल थॉम्पसन की पुस्तक *'द वॉइस ऑफ़ द पास्ट'* का ज़िक्र करना उपयुक्त होगा। थॉम्पसन अपनी पुस्तक में कहते हैं कि "सभी इतिहास लेखन का एक सामाजिक उद्देश्य होता है। मौखिक इतिहास से यह तात्पर्य नहीं है कि यह एक बदलाव लाने वाला यंत्र है, बल्कि यह इस बात पर निर्भर है करता है कि हम किस प्रकार से इसका प्रयोग करते हैं। मौखिक इतिहास का प्रयोग हम नए दायरों की तलाश के लिए कर सकते हैं। यह हमें एक ऐसा अनुभव प्रदान करता है जो लोगों ने स्वयं अपने शब्दों में इसे संभाल कर रखा था।"[2] थॉम्पसन आगे यह भी कहते हैं कि हालांकि मौखिक इतिहास को रिकॉर्डिंग की तरह कह सकते हैं लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि इसका कोई भूतकाल नहीं था बल्कि मौखिक इतिहास अपने आप में ही एक पूर्ण इतिहास की तरह है। यह ऐतिहासिक ज्ञान को व्यक्तिगत अनुभवों और वक्ता के विचारों के आधार पर उपलब्ध करवाता है, जिसमें गवाह के साथ-साथ मिथ्य, कहानियाँ, गाने इत्यादि भी शामिल होते हैं।[3] यहाँ मौखिक इतिहास का प्रयोग करते समय हमें यह सावधानी भी बरतने की आवश्यकता है कि बताने वाला व्यक्ति किन बातों को बता रहा है और क्या कुछ नहीं बता रहा है, क्योंकि जिन बातों का भी वह ज़िक्र कर रहा है उससे उसकी भावनाएं जुड़ी हैं, अतः आवश्यक नहीं है कि वह सभी बातें पूर्ण रूप से सत्य ही बताए।

अतः इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर जब मैंने 'विभाजन संग्रहालय' के आगंतुकों के अनुभव जानने के लिए क्षेत्र कार्य प्रारंभ किया तो मेरा सर्वप्रथम मुख्य लक्ष्य यही रहा कि विभिन्न वर्ग व समूह के अनुभवों की प्राप्ति हो। इसके अलावा स्मृतियों और भावनाओं में आए बदलावों को लेकर मैंने अपने कुछ निजी संपर्कों द्वारा विभाजन पीड़ित लोगों से भी साक्षात्कार प्राप्त किए।

आगंतुकों के अनुभव

जब हम संग्रहालय में आगंतुकों की बात करते हैं तो यहाँ हमें यह समझना आवश्यक है कि संग्रहालयों में प्रवेश करने वाले आगंतुकों में सभी का मकसद एक जैसा नहीं होता है, और यहाँ

---

[2] पॉल थॉम्पसन, *द वॉइस ऑफ़ द पास्ट : ओरल हिस्ट्री, थर्ड एडिशन* (न्यू यॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000) पृ॰ 1

[3] *वही*, पृ॰ 25

उनकी विचारधारा समझने के लिए उनके साक्षात्कारों की आवश्यकता पड़ती है ताकि उनके मक़सदों को समझा जा सके। इन साक्षात्कारों में सर्वप्रथम सुनील मेहता जी हैं जो कि एक व्यवसाई थे और गोवा से आए हुए थे। इनका साक्षात्कार इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उनके परिजन स्वयं विभाजन से प्रभावित थे अतः उन्होंने विभिन्न विषयों पर अपने मत रखे।

शोधार्थी-: विभाजन के बारे में आपकी अबतक क्या जानकारी थी और वह किस प्रकार प्राप्त हुई?

सुनील मेहता-: देखिए हमारे अभिभावक विभाजन के समय भारत आए थे जिनसे हमने विभाजन के बारे में केवल सुना था लेकिन इस प्रकार से फोटो और वीडियो को कभी नहीं देखा था। इन्हें देखने के बाद विभाजन के समय की स्थिति के बारे में और अच्छी जानकारी प्राप्त हुई कि वास्तव में उस समय क्या परिस्थितियाँ थी। लेकिन चाहे वह कोई भी राजनेता हो, जिनकी नीतियों के कारण यह हुआ इसका इतिहास स्पष्ट नहीं है।

शोधार्थी-: आपको यह लगता है की यह विभाजन संग्रहालय एक ऐसा माध्यम है जो भावी पीढ़ी को पुस्तकों से ज़्यादा एक नवीन प्रकार का ज्ञान प्रदान कर उनके विभाजन के प्रति इतिहास की समझ को मज़बूत करेगा?

सुनील मेहता-: हाँ मैं यह मानता हूँ कि इसमें प्रदर्शित चित्र बहुत अच्छे हैं, वीडियो बहुत अच्छी हैं और इन सभी का ख़ाका भी बहुत अच्छी तरह से तैयार किया गया है। लेकिन मेरे हिसाब से समस्या यह है कि विभाजन हुआ क्यों? इसके पीछे वास्तविक समस्या क्या थीं? इसकी जानकारी सही ढंग से अब भी प्राप्त नहीं होती। अगर हम ऐतिहासिक रूप से साधारण रूप में घटनाओं को लिखें कि इस साल में यह घटना हुई, इस साल में यह, और इन ज़नाब को यह फ़ैसला लेना पड़ा और इन ज़नाब को यह फ़ैसला। इन सभी बातों को सही ढंग से पेश किए जाने की ज़रूरत है, भले ही वह दुःख पहुँचाए, लेकिन वह वास्तविक हो और हमें हक़ है वास्तविकता को जानने का कि यह हुआ क्यों और क्या वजह रही थी और कोई उंगली उठा कर यह क्यों नहीं कहता कि बाबा देखो यह लोग इसके लिये ज़िम्मेवार थे और इनकी वजह से यह हुआ।[4]

इस प्रकार से सुनील मेहता जी का यह मानना है कि यह संग्रहालय विभाजन की हिंसा व उसके बाद लोगों के जीवन में आई विभिन्न समस्याओं की बात तो करता ही है साथ ही कालानुक्रमिक दृष्टि से ब्यौरा भी उपलब्ध करवाता है। लेकिन मुख्य समस्या अभी भी यही है कि आख़िरकार विभाजन का असली ज़िम्मेवार किसे माना जाए? क्योंकि कबतक इस मसले पर यह चुप्पी जारी रहेगी।

इसके बाद हमारा साक्षात्कार उदय कुमार जी से हुआ जो दिल्ली से आए हुए थे और पेशे से एक व्यापारी थे। उन्होंने अपने अनुभवों को इस प्रकार से साझा किया-

"देखिए यह हमारे भूतकाल को समझने का बहुत ही अच्छा व सरल जरिया है और क्योंकि हमने तो विभाजन को देखा नहीं है न ही हमारी आगे की पीढ़ी को इसके बारे में बहुत ज़्यादा जानकारी है, तो हम जैसे लोगों के लिए उस समय, उस स्तिथि को इसके ज़रिए समझना बहुत आसान होगा। क्योंकि विभाजन बहुत ही बुरी चीज़ थी, जो भी कुछ हुआ वह बहुत ही बुरा हुआ और इसके बाद भी जिस प्रकार लोग आगे बढ़े और सब कुछ जो आज काफी हद तक सही दिखाई दे रहा है, यह काफी अच्छा अनुभव रहा मेरे लिए। इसने मेरे ज्ञान को विभिन्न तरीक़ों से बढ़ाया है। इसलिए मैं तो यही कहूँगा की विभाजन संग्रहालय का अनुभव मेरे लिए बहुत ही अच्छा रहा है।"[5]

---

[4] सुनील मेहता के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब, 6 मार्च 2018

[5] उदय कुमार के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब 7 मार्च 2018

इस प्रकार उदय कुमार की बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि बहुत से ऐसे लोग भी हैंजिन्हें विभाजन की हिंसा व बर्बादी का जरा भी अंदेशा नहीं है। क्योंकि यह विषय ही इतना संवेदनशील हो गया है। लेकिन 'विभाजन संग्रहालय' हमें वह उपलब्धता प्रदान करवाता है जिससे हम अपने अतीत के न केवल दुःखद पलों का अनुभव कर सके बल्कि उससे भी महत्वपूर्ण जिस प्रकार से लोग आगे बढ़े, उनकी ज़िन्दगियों से भी बहुत बड़ी सीख लेनी चाइए।

इसके अलावा संग्रहालय में आई नीतीशा जो की एक विद्यार्थी हैं बारहवीं कक्षा की तथा वह उड़ीसा से थी। एक विधार्थी के नजरिए से उन्होंने संग्रहालय के अनुभव को निम्न प्रकार से बयान किया-

"अभी तक मैंने अपनी पाठ्य-पुस्तकों में ही विभाजन की घटना के बारे में पढ़ा था, लेकिन वास्तव में लोगों ने कितने कष्ट सहे ख़ास तौर पर महिलाओं के साथ कितने अत्याचार हुए, यह सब मुझे इस संग्रहालय में आकर ही पता चला, क्योंकि मुझे इतिहास में दिलचस्पी है और आगे स्कूल में भी विभाजन को लेकर कक्षाएँ चलेंगी तो अब मैं उन घटनाओं को इस संग्रहालय के द्वारा संबंध करके आसानी से समझ पाऊंगी। यह संग्रहालय मेरे लिए एक नवीन प्रकार की पुस्तक की तरह रहा है, जिससे मुझे बहुत कम समय में विभाजन के हर पहलू की जानकारी प्राप्त हो सकी।"[6]

वहीं संग्रहालय के विषय में ही नीतीशा के पिताजी सत्यजीत जी ने भी अपने अनुभवों को इस प्रकार से साझा किया-

"हमने भी विभाजन को केवल किताबों में ही पढ़ा था लेकिन इतने विस्तार से कभी नहीं, जितना कई हमें यहाँ आकर पता चला। यहाँ आकर हमें काफी सारी वस्तुओं की सजीव जानकारियाँ प्राप्त हुई, जिस प्रकार से उनका मौखिक व दृश्यात्मक चित्रण किया गया है। सबसे प्रमुख बात रही है कि विभाजन के सबसे ज़्यादा प्रभावित दोनों भाग अर्थात् यहाँ केवल पंजाब ही नहीं बल्कि बंगाल की भी विस्तृत जानकारी हमें प्राप्त होती है, और यह सब बिल्कुल वास्तविक लगता है मानो सारी चीज़ें हमारे सामने ही हो रहीं हैं। हमारी नई पीढ़ी को विभाजन के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं होगी, लेकिन संग्रहालय के माध्यम से उन्हें बहुत कुछ जानने और सीखने को मिलेगा। मुझे सबसे महत्वपूर्ण यह लगा कि जब हम पहले केवल जलियाँवाला बाग जाते थे तो केवल वहीं का ज्ञान प्राप्त होता था, लेकिन अब इस संग्रहालय के बनने के बाद अब जब हम जलियाँवाला बाग से यहाँ आते हैं, तो एक प्रकार से हमारा इतिहास पूर्ण रूप से प्रदर्शित होता है कि स्वतंत्रता पूर्व किस प्रकार की घटनाएँ हुई व स्वतंत्रता पश्चात् विभाजन के बाद क्या-क्या हुआ।"[7]

इस प्रकार अगर हम सभी साक्षात्कारों की समीक्षा करें तो यह समझने में आसानी होती है कि विभाजन संग्रहालय न केवल लोगों को अपने विभिन्न माध्यमों से नवीन जानकारियाँ उपलब्ध करवा रहा है, बल्कि यह उन स्मृतियों को भी सहेजने में मददगार है जो एक समय बाद नष्ट हो जाती। विभिन्न साक्षात्कारों से यह स्पष्ट हो रहा है कि यह संग्रहालय विभाजन के स्मरणोंत्सव के रूप में लोगों द्वारा बहुत पसंद किया जा रहा है। यहाँ हमें संग्रहालय के संदर्भ में आगुंतकों से मुख्यतः दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ प्राप्त होती हैं- एक वे लोग, जो विभाजन से प्रभावित रहे हैं। उनके संदर्भ में हमें यह देखने को मिलता है कि उन लोगों के अंदर अभी भी इस पूरी प्रक्रिया को लेकर एक गुस्सा भरा हुआ है, क्योंकि उनका

[6] नीतीशा के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब 7 मार्च 2018

[7] सत्यजीत के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब, 7 मार्च 2018

लगभग सबकुछ बरबाद हो चुका था। ये लोग संग्रहालय में स्वयं को तलाशने का प्रयास करते हैं, उन घटनाओं से स्वयं को जोड़ते हैं, कि किस प्रकार से उन्होंने यह सबकुछ सहा और किस प्रकार वो आगे बढ़े। वहीं दूसरी तरफ जिन्होंने केवल किताबों या अन्य माध्यमों द्वारा इसे जाना था या जो लोग अभी तक इससे अनभिज्ञ थे उनके लिए यह संग्रहालय विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ व इतिहास को समझने का सरल व सुगम तरीके उपलब्ध करवा रहा है। हालांकि जो लोग इससे संबंधित रहे हैं या जिन्हें इसके बारे में ज़्यादा जानकारी पहले से ही प्राप्त है उनका यह भी मानना है कि यह संग्रहालय विभाजन की पूर्ण तस्वीर प्रस्तुत कर पाने में अभी भी असफल ही रहा हैं, लेकिन फिर भी इसके द्वारा विभाजन को जो आज सत्तर वर्षों बाद एक स्मारक स्थल प्राप्त हुआ है, यह उस दिशा में एक सराहनीय कार्य है।

बदलती स्मृतियाँ और भावनाएं

स्मृतियाँ और भावनाएं अक्सर इतिहास के उन पहलुओं से अवगत कराती हैं जिनकी जानकारी न तो हमें अभिलेखागारों से प्राप्त होती है न ही किसी अन्य अधिकारिक दस्तावेजों से। लेकिन हमें यहाँ यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि स्मृतियों और भावनाओं में समय, परिस्तिथियों व पीढ़ी दर पीढ़ी बदलाव आना लाज़मी है, क्योंकि जिन घटनाओं की बात हम कर रहे हैं उन घटनाओं पर हर व्यक्ति का अपना अलग-अलग नजरिया होता है, इसलिए वह अपनी स्मृति का अपने अनुसार किस प्रकार से निर्माण करेगा वह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है। स्मृतियों के संदर्भ में बात करते हुए पॉल थॉम्पसन कहते हैं कि मानव धारणा से प्राप्त हर ऐतिहासिक स्रोत व्यक्तिपरक है, लेकिन केवल मौखिक स्रोत हमें उस व्यक्तिपरकता को चुनौती देने कीं अनुमति प्रदान करता है कि हम स्मृतियों की उन परतों को पुनः खोले, उन अंधेरों को वापस तलाशें और छिपी हुई सच्चाई तक पहुँचने की कोशिश करें।[8] कुछ स्मृतियाँ जो महत्त्वपूर्ण होती हैं वह खतरनाक भी हो सकती है। क्योंकि इन स्मृतियों में ही अतीत का दर्द, स्नेह और उपलब्धि, अच्छी यादों के साथ ही कुछ झूठी बातें, यह सभी शामिल हो सकता है।[9] अतः स्मृतियों का अध्ययन विशेष सावधानियों की भी मांग करता है। यहाँ अगर अब हम विभाजन सम्बन्धित स्मृतियों और भावनाओं की बात करें तो उसमें बहुत ज़्यादा परिवर्तन देखने को मिलते हैं। यहाँ परिवर्तन से यह तात्पर्य बिल्कुल भी नहीं है कि लोगों ने पूरी कहानी को ही बदल दिया है, बल्कि लोग अब उन घटनाओं के बारे में बात करना चाहते हैं, बताना चाहते हैं, जो कि एक समय पहले तक नहीं देखा गया था। विभाजन स्मृतियों और भावनाओं के इतिहास के संदर्भ में उर्वशी भूटालिया अपनी पुस्तक 'द अदर साइड ऑफ साइलेंस' में लिखती हैं कि विभाजन के समय जो भी कुछ हुआ था, मुख्यतः महिलाओं, बच्चों तथा निचली जाती के लोगों के साथ, यहाँ उन सभी का इतिहास जानने के लिए हमें इतिहास के पुनः अध्ययन की आवश्यकता है और यह स्मृतियों के द्वारा ही संभव है।[10] क्योंकि हलहीं तक हमें इसके बारे में बहुत कम ही जानकारी मिली है कि विभाजन के माध्यम से रहने वाले लोगों के लिए इसका क्या अनुभव है, कैसे वे एक साथ फिर से अपनी ज़िंदगी जी रहे हैं, कैसे उन्होंने नुकसान, आघात और दुःख से सामना किया।[11] अतः यहाँ यह समझने की आवश्यकता है कि

---

[8] थॉम्पसन, *द वॉइस ऑफ़ द पास्ट*, पृ०173

[9] *वही*, पृ० 183

[10] उर्वशी भूटालिया, *द अदर साइड ऑफ साइलेंस : वॉयसेस फ्रॉम द पार्टीशन ऑफ इंडिया,* (न्यू दिल्ली : पेंगुइन बुक इंडिया,1998) पृ० 351

[11] उर्वशी भूटालिया, "*ऐन आर्काइव विद् ए डिफरेंस : पार्टीशन लेटर्स*", में *द पार्टीशन ऑफ मेमोरी : द आफ्टरलाइफ़ ऑफ़ द डिवीज़न ऑफ इंडिया,* संपादित. सुवीर कौल (दिल्ली : परमानेंट ब्लैक, 2001) पृ० 209

स्मृतियाँ इतिहास प्राप्ती का एक अच्छा माध्यम होती हैं।

विभाजन सम्बन्धित स्मृतियों और भावनाओं में आए बदलावों को समझाने के लिए यहाँ मैं चंडीगढ़ के सेवानिवृत्त सी.बी.आई. ऑफिसर केवल सिंह तथा चंडीगढ़ उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त वकील ओ.पी. नारंग जी के साक्षात्कारों का सहारा लूंगा, जिन्होंने इस घटना को उस समय बहुत करीब से देखा था और क्योंकि इनके परिवार ने विभाजन के समय पलायन का दंश सहा था इसलिए पलायन से पहले की घटनाओं से लेकर पलायन के बाद तक की प्रक्रिया में तथा इन सत्तर वर्षों में किस प्रकार इन लोगों की मानसिकताओं में परिवर्तन आया, इन सबका अनुभव हमें इनके साक्षात्कारों से प्राप्त होता है। वहीं इस विषय पर और ज़्यादा प्रकाश डालने के लिए विभाजन संग्रहालय की प्रबंधक राजवेन्द्र कौर का भी साक्षात्कार किया गया है जो संग्रहालय में स्वयं आए दिन विभाजन से प्रभावित लोगों के साक्षात्कार करके उनके अनुभवों को रिकॉर्ड करती हैं।

यहाँ सर्वप्रथम केवल सिंह अपने अनुभव साझा करते हुए कहते हैं कि-

"विभाजन से पहले हम लोग जिला कबूतला (पंजाब) में रहते थे तो हमारे गाँव में ही तेलियों के कई घर थे तथा इसकी कुछ ही दूरी पर मुसलमानों के भी घर थे। इसलिए जब भी कोई त्यौहार या आयोजन होता था तो हम सभी लोग मिल-जुलकर सभी चीज़ें एक साथ मनाते थे। मेरे ख़ुद के घर से एक मुस्लिम परिवार के इतने गहरे सम्बन्ध थे कि उनके माता-पिता जब भी किसी काम से जाते थे तो उनके बच्चे पूरे वक़्त हमारे यहाँ ही रहते थे। लेकिन जैसे ही विभाजन की अफ़वाह फैली, माहौल पूरी तरह से बदल गया। सबके दिलों में एक अजीब सा डर बैठ गया, क्योंकि रात में कुछ गुंडे अपने चेहरे को ढक कर आते थे जिनका कोई धर्म या ईमान नहीं था बी केवल लूटपाट करते थे। जिससे आपसी लोग एक-दूसरे को शक की निगाहों से देखने लगे और आपस में ही मार-काट मचने लगी। हमारा क्या दोष था? हम क्यों वहाँ से सब रिश्ते-नाते, ज़मीन-जायदाद छोड़ कर भागे? इसका जवाब देने वाला कोई नहीं है ना ही कोई इसकी ज़िम्मेदारी लेने वाला है। पहले इन सब मुद्दों पर बोला भी नहीं जाता था, लेकिन अब धीरे-धीरे जिस प्रकार माहौल बदला है, लोग उन चीज़ों पर बात करना चाह रहें हैं और जिस प्रकार से अभी अमृतसर में विभाजन संग्रहालय भी बना है, यह सब हामरी बदलती मानसिकता का ही परिणाम है।"[12]

वहीं स्मृतियों को लेकर ओ.पी. नारंग जी अपने अनुभव बताते हुए कहते हैं कि-

"विभाजन से पहले ऐसा नहीं था, लोग एक- दूसरे के खून के प्यासे नहीं थे। लेकिन विभाजन ने सबकुछ बदल दिया। मेरा परिवार स्वयं ही लाहौर से यहाँ आया था और जो कुछ भी हमने देखा वह बहुत ही डरावना था। हम आज़ादी का जश्न तो मनाते हैं, लेकिन विभाजन के बारे में बात नहीं करते हैं, जबकि आज़ादी की वजह से विभाजन हुआ था और विभाजन की वजह से आज़ादी मिली। आप यक़ीन नहीं करेंगे कि जब हम यहाँ आए थे तो जितनी नफ़रत हमारे अंदर भरी थी उतनी ही यहाँ के लोग हमसे भी करते थे। लोग हमें शरणार्थी कहकर तिरस्कार करते थे, क्योंकि उन्हें भी लगता था कि यह दूसरे मुल्क से आए हैं, जबकि बंटवारा तो एक ही मुल्क का हुआ था। लेकिन समय के साथ-साथ चीज़ें बदलती गई और लोगों ने एक-दूसरे को अपना लिया। इस तरह विभाजन हमारे इतिहास की सबसे भयानक घटना के साथ-साथ एक कलंक की तरह है, जिससे लोग अभी भी उभर नहीं सके हैं।"[13]

---

[12] केवल सिंह के साथ मौखिक साक्षात्कार, चंडीगढ़, पंजाब, 9 मार्च 2018

[13] ओ.पी. नारंग के साथ मौखिक साक्षात्कार, चंडीगढ़, पंजाब, 9 मार्च 2018

इसके अलावा स्मृतियों और भावनाओं के बारे में बात करते हुए विभाजन संग्रहालय की प्रबंधक राजवेन्द्र कौर जी का कहना है कि-

"विभिन्न साक्षात्कारों को लेते समय बहुत अलग प्रकार के अनुभव रहे हैं, क्योंकि अब लोग बताना चाह रहें हैं कि वास्तव में उनके साथ क्या हुआ है। यह सभी लोग सकारात्मक रूप से इन कहानियों को बताते हैं, जहाँ हम आसानी से समझ सकते हैं कि लोगों की सोच में अब कितना बड़ा बदलाव आ चुका है, क्योंकि ऐसा नहीं है कि लोगों ने वहाँ से आकर केवल खोया ही था, बल्कि काफ़ी लोगों ने तरक्की भी की। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि कुछ बहुत बुरा होने के बाद ऐसा नहीं है कि सब ख़त्म हो जाता है, बल्कि कई लोगों की तो ज़िन्दगी ही वहीं से प्रारंभ हुई, लोगों के पूरे जीवन में ही नए बदलाव आए, जिसके लिए उन्होंने बहुत ज़्यादा कुर्बानियां दी हैं, बहुत ज़्यादा मेहनत की है, उसके बाद उन्होंने अपनी ज़िन्दगी को एक नया आयाम दिया है।"[14]

यहाँ अगर हम साक्षात्कारों का विश्लेषण करें तो हमें यह स्पष्ट रूप से नजर आता है कि जहाँ संग्रहालय के कुछ आगंतुक जिनका परिवार विभाजन से प्रभावित रहा है, उन लोगों के मन में ग़ुस्सा या नाराज़गी अभी भी दिखाई देती है। वहीं दूसरी तरफ उनकी स्मृतियों और भावनाओं में भी अब बदलाव आ चुका है। इस मुद्दे को और ज़्यादा समझने के लिए रविकांत व तरुण के सेंट द्वारा संपादित पुस्तक 'ट्रांसलेटिंग पार्टीशन' का जिक्र करना उचित रहेगा। जिन्होंने विभिन्न साहित्यों के आधार पर सामूहिक स्मृतियों और भावनाओं की बात की है। अपनी पुस्तक की प्रस्तावना में बात करते हुए रविकांत व तरुण सेंट का कहना है कि अगर हम विभाजन सम्बन्धी साहित्यों की बात करें तो एक स्तर पर पागलपन के रूपक को पारंपरिक संक्षिप्त लिपी के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है, ताकि वह समझ में आ सके। इन साहित्यों ने लेखकों को एक ऐसा क्षेत्र प्रदान किया जहाँ वे स्वयं के लिए तर्क संगत क्षेत्र को संरक्षित कर सकते थे।[15] यहाँ हम विभाजन के समय की परिस्थितियों को समझने के लिए इसी पुस्तक में उध्दरित कहानी "और कितने पाकिस्तान" जो कि कमलेश्वर द्वारा रचित है, का ज़िक्र कर सकते हैं। इस कहानी के कुछ भागों में परिस्तिथियों का ज़िक्र इस प्रकार से किया गया है- " भगवान जाने कितने पाकिस्तान बन गए! एक पाकिस्तान बनाने के साथ-साथ, कहाँ-कहाँ, कैसे-कैसे, सब बातें उलझ कर रह गई। सुलझा तो कुछ भी नहीं।"[16] दंगाग्रस्त इलाकों से गुजरते वक्त यही बातें ज़हन में आती हैं कि "क्या ये जो कुछ लोग आदमियों की तरह दिखाई पड़ते थे, सच में या कोई ख़ौफ़नाक सपना? अब तो कटा-फटा आदमी ही सच लगता था। पूरे शरीर का आदमी देखकर दहशत होती थी।"[17]

इस प्रकार से इन कहानियों द्वारा यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि किस प्रकार परिस्तिथियाँ बदली जिसने हिंसा व नफ़रतों को बढ़ाया। यह यह हिंसा और डर लोगों के दिलो-दिमाग़ पर इस तरह हावी हो चुका था कि लोगों को एक-दूसरे पर भरोसा करने से भी दर लगता था, जो कि आज तक लोगों के ज़हन में अपनी छाप छोड़े हुए है। लेकिन अब परिस्तिथियाँ यह हो चुकी हैं कि लोगों के मन में जो भी बातें हैं, अब वह सामने आकर उन्हें कहना या बताना चाह रहे हैं, जहाँ पहले अधिकांश लोग जो भी इस घटना से प्रभावित थे या जिन्होंने भी इस प्रक्रिया को बहुत करीब से अनुभव किया था वे इस विषय ओर बात करना भी नहीं चाह रहे थे, जिसके पीछे

[14] राजवेन्द्र कौर के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब 8 मार्च 2018

[15] रविकांत, तरुण के सेंट संपादित *ट्रांसलेटिंग पार्टीशन,* (नई दिल्ली : कथा पब्लिकेशन, 2001) पृ० XVI

[16] वही पृ० 12

[17] वही पृ० 24

एक बड़ा कारण यह भी रहा कि विभाजन का मुद्दा इतना संवेदनशील कर दिया गया रहा कि लोग इस बारे में बात करने पर स्वयं को असहज और असुरक्षित महसूस करते थे। क्योंकि लोगों के मन में यह धारणा बैठ चुकी थी कि हर व्यक्ति जो भी उन्हें दिखाई दे रहे हैं, वे सभी उनकी हालत के लिए ज़िम्मेवार हैं। इसके अलावा लोगों को अपनी पहचान उजागर करने पर 'शरणार्थी' नाम के तिरस्कार को न सहना पड़े व उन्हें भेद-भाव के नज़रिए से न देखा जाने लगे। यह सभी कारण उनकी स्मृतियों व भावनाओं को जकड़ चुके थे, लेकिन आज विभाजन संग्रहालय व विभिन्न संस्थाओं द्वारा चलाए गए प्रयासों वि लोगों द्वारा स्वयं के शिक्षित नज़रिए ने उनकी मानसिकता में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए, जिससे आज वह सभी लोग स्वयं सबके सामने आकर अपने अनुभवों को साझा कर रहें हैं। अतः विभाजन संग्रहालय ने विभाजन सम्बन्धित स्मृतियाँ और भावनाओं को एक नया आयाम प्रदान किया है, जो हमें सूक्ष्म इतिहास लेखन की ओर आकर्षित करती है।

संदर्भ

1. जलियाँवाला बाग़ संग्रहालय, अमृतसर, पंजाब
2. विभाजन संग्रहालय, अमृतसर, पंजाब
3. सुनील मेहता के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब, 6 मार्च 2018
4. उदय कुमार के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब 7 मार्च 2018
5. नीतीशा के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब 7 मार्च 2018
6. सत्यजीत के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब, 7 मार्च 2018
7. केवल सिंह के साथ मौखिक साक्षात्कार, चंडीगढ़, पंजाब, 9 मार्च 2018
8. ओ.पी. नारंग के साथ मौखिक साक्षात्कार, चंडीगढ़, पंजाब, 9 मार्च 2018
9. राजवेन्द्र कौर के साथ मौखिक साक्षात्कार, अमृतसर, पंजाब 8 मार्च 2018
10. एंडरसन, बेनेडिक्ट, इमेजिनेड कम्यूनिटीज़ : रिफ्लेक्शंस ऑन थे ओरिजिन स्प्रेड ऑफ़ नेशनलिज्म, रिवाइज्ड एडिशन, लन्दन: वर्सो, 2006.
11. कौल, सुवीर, संपादित द पार्टीशन ऑफ मेमोरी : द आफ्टरलाइफ़ ऑफ़ द डिवीज़न ऑफ इंडिया, दिल्ली : परमानेंट ब्लैक, 2001.
12. गुहा- ठकुरता, तासी, मोनुमेंट्स, ऑबजेक्ट्स, हिस्ट्री: इंस्टिट्यूशंस ऑफ़ आर्ट इन कोलोनियल एंड पोस्ट कोलोनियल इंडिया, न्यू यॉर्क: कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004.
13. ज़मींदार,वज़ीरा फाज़िला- याकूबली, द लॉंग पार्टीशन एंड द मेकिंग ऑफ़ मॉडर्न साउथ एशिया : रिफ़्यूजीस, बाउंडरीज़, हिस्ट्रीज़, न्यू यॉर्क : कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007.
14. थॉम्पसन, पॉल, द वॉइस ऑफ़ द पास्ट : ओरल हिस्ट्री, थर्ड एडिशन, न्यू यॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000.
15. दास, वीना, लाइफ एंड वर्ड्स: वायलेन्स एंड द डिसेंट इंटो द ऑर्डिनरी, लन्दन: यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 2007.
16. बनर्जी, न.आर., म्यूजियम एंड कल्चर हेरिटेज इन इंडिया, दिल्ली: अगम कला प्रकाशन, 1990.
17. भूटालिया, उर्वशी, द अदर साइड ऑफ साइलेंस: वॉयसेस फ्रॉम द पार्टीशन ऑफ इंडिया, न्यू दिल्ली : पेंगुइन बुक इंडिया,1998.
18. रविकांत, तरुण के सेंट संपादित ट्रांसलेटिंग पार्टीशन, नई दिल्ली : कथा पब्लिकेशन, 2001.